Toppersnotes
Unleash the topper in you

UPTET

UTTAR PRADESH BASIC EDUCATION BOARD

उ.प्र. शिक्षक पात्रता परीक्षा

उच्च प्राथमिक स्तर ¼dyk ox½

भाग–2(ब)

सामान्य हिन्दी एवं संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

हिन्दी

1. हिन्दी भाषा 1
2. हिन्दी साहित्य 2
3. वर्णमाला 12
4. विराम चिन्ह 19
5. शब्द भेद 20
6. संधि 29
7. समास 38
8. संज्ञा से अव्यय तक 43
9. अलंकार 53
10. रस 59
11. छन्द 64
12. पर्यायवाची शब्द 68
13. विलोम शब्द 70
14. अनेक शब्दो के लिए एक शब्द 72
15. वर्तनी 75
16. प्रमुख लेखक व उनकी रचनाएँ 77
17. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 83
18. अवतरण के रचियता 85
19. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2019** 97
20. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2018** 103
21. हिन्दी **UPTET** प्रश्नपत्र–**2017** 108

- ❖ भाषा अधिगम एवं अर्जन 114
- ❖ भाषा कौशल 120
- ❖ शिक्षक सहायक सामग्री 124
- ❖ उपचारात्मक शिक्षण 125

संस्कृत

1. वर्ण 127
2. संधि 137
3. सुबंत प्रकरण, तिङन्त प्रकरण 158
4. वाच्य परिवर्तनम 177
5. उपसर्ग 182
6. प्रत्यय 184
7. पर्यायवाची शब्द 189
8. विलोम शब्द 191
9. अव्यय प्रकरण 192
10. समासः प्रकरण 195
11. अपठित पंद्याश 203
12. अपठित गंद्याश 206

Toppersnotes
Unleash the topper in you

हिन्दी भाषा (मुख्य तथ्य)

→ हिन्दी की आदि जननी संस्कृत है।

→ संस्कृत पालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है

हिन्दी का विकास क्रम :—

संस्कृत → पालि → प्राकृत → अपभ्रंश → अवहट्ठ → प्राचीन हिन्दी

→ हिन्दी शब्द मूलतः फारसी का है न कि हिन्दी भाषा का।

→ हिन्दी शब्द के दो अर्थ हैं — हिन्दी देश के निवासी और हिन्द की भाषा

→ प्रमुख रचनाकर →

→ खड़ी बोली का प्रारम्भिक रूप सरहपा आदि सिद्धों गोरखनाथ आदि नाथों, अमीर खुसरो जैसे सूफियों जयदेव, नामदेव, रामानन्द आदि संतो की रचनाओं में उपलब्ध है।

→ ब्रजभाषा के रचनाकार ⇒ (सूरसागर) सूरदास रसखान मीराबाई आदि प्रमुख कृष्ण भक्त

कवियों ने ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास में अमूल्य योगदान दिया है।

अवधी → कुतुबन (मृगावती), जायसी (पद्मावत), मंझन (मधुमालती) असमान (चित्रावली)

→ राजभाषा एक संवैधानिक शब्द है।
→ प्रत्येक वर्ष 14 Sep. को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।
→ संविधान में भाषा विषयक उपबंध भाग 17 (राजभाषा) के अनु: 343 से 351 तक एवं 8 वी अनुसूची में दिये गये है।
→ हिन्दी भाषा के मानकीकरण की दृष्टि से द्विवेदी युग सार्वधिक महत्वपूर्ण युग था।

[हिन्दी साहित्य (मुख्य तत्थ)]

आदिकाल
650 ई० - 1350 ई०

पूर्वमध्य काल/भक्ति काल
1350 - 1650 ई०

रीतिकाल
(उत्तर दार्शित्व मध्यकाल)
(1650 - 1850 ई०)

आधुनिक काल
(1850 से अब तक)

- भारतेन्दु युग (1850 - 1900 ई०)
- द्विवेदी युग (1900 - 1920 ई०)
- छायावाद युग (1918 - 1936 ई०)
- छायावादोत्तर युग (1936 ई० से बाद)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

आदिकाल (650 ई०-1350 ई०)

→ हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों के नामकरण का प्रथम श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को है।

→ आदिकाल को ग्रियर्सन ने 'चारण काल' मिश्रबंधु ने प्रारंभिक काल महावीर प्रसाद द्विवेदी ने बीजवपन काल शुक्ल ने 'आदिकाल वीरगाथाकाल राहुल सांकृत्यायन ने 'सिद्ध-सामंत काल' राम कुमार वर्मा ने संधिकाल हजारी प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल की संज्ञा दी है।

→ इस काल में आल्हा छंद बहुत प्रचलित था। यह वीर रस का बड़ा ही लोकप्रिय छंद था।

→ आदिकालीन रचना व रचनाकार —

	रचना		रचनाकार
(1)	खुमान रासो	———	दलपति विजय
(2)	बीसलदेव रासो	———	नरपति नाल्ह
(3)	हम्मीर रासो	———	शार्ङ्ग धर
(4)	पृथ्वीराज रासो	———	चन्दवरदाई
(5)	कीर्तिलता	———	विद्यापति
(6)	पउमचरिउ	———	स्वयंभू
(7)	मृगावती	———	कुतुबन
(8)	परमाल रासो	———	जगनिक

→ भक्तिकाल को 'हिन्दी साहित्य' का स्वर्ण काल' कहा जाता है।

→ भक्तिकाल काव्य की दो काव्य धारायें है।

(1) निर्गुण काव्य धारा (2) सगुण काव्य धारा

ज्ञानाश्रयी प्रेमाश्रयी कृष्णाश्रयी रामाश्रयी

भक्तिकालीन रचना व रचनाकार

	रचना	—	रचनाकार
(1)	साखी	—	कबीरदास
(2)	बीजक	—	कबीरदास
(3)	पद्मावत	—	मलिक मुहम्मद जायसी
(4)	अखरावट	—	"
(5)	आखिरी कलाम	—	"
(6)	सूरसागर	—	सूरदास
(7)	सूरसारावली	—	
(8)	साहित्य लहरी	—	
(9)	श्रीराम चरितमानस	—	गोस्वामी तुलसीदास
(10)	विनय पत्रिका	—	"
(11)	कवितावली	—	"
(12)	गीतावली	—	"
(13)	दोहावली	—	"
(14)	कृष्ण गीतावली	—	"
(15)	राम लला नहछू	—	"
(16)	पार्वती मंगल	—	"
(17)	जानकी मंगल	—	"

(18)	बरवै रामायण	—	"
(19)	मधुमालती	—	मंझन
(20)	मृगावती	—	कुतबन
(21)	रामचन्द्रिका	—	केशवदास
(22)	राम आरती	—	रामानंद
(23)	प्रेमवाटिका	—	रहीम
(24)	दानलीला	—	"
(25)	सुधामा-चरित	—	नरोत्तमदास

उत्तरमध्यकाल / रीतिकाल (1650 - 1850 ई०)

इसे मिश्र बंधु ने अलंकृत काल. रामचन्द्र शुक्ल ने रीतिकाल और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने शृंगार काल कहा है।

→ रीतिकाल की दो मुख्य प्रवृत्तियाँ थी।

(1) रीतिकाल निरूपण (2) शृंगारिकता

→ रीतिकाल की रचना एवं रचनाकार —

	रचना	रचनाकार
1)	रामचन्द्रिका	केशवदास
2)	रसिक प्रिया	केशवदास
3)	नखशिख	केशवदास
4)	सतसई	बिहारी
5)	शिवराज भूषण	भूषण
6)	शिवा बावनी	भूषण
7)	छत्रसाल दशक	"
(8)	पिंगल	चिन्तामणि

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(9) नरसीजी का मायरा — मीराबाई

10) रागगोविन्द — मीराबाई

11) प्रेमवाटिका — रसखान

12) गंगालहरी — पद्माकर

आधुनिक काल

① भारतेन्दु युग—

→ भारतेन्दु युग का नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी के नाम पर पड़ा।

भारतेन्दु युगीन रचना व रचनाकार -

	रचना		रचनाकार
(1)	प्रेम-माधुरी	—	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(2)	प्रेम सरोवर	—	
(3)	प्रेम तरंग	—	
(4)	उर्दू का स्यापा	—	
(5)	प्रेमाश्रु वर्णन	—	
(6)	श्रृंगार विलास	—	प्रताप नारायण मिश्र
(7)	प्रेम पुष्पावली	—	
(8)	मन की लहर	—	
(9)	ऋतुसंहार (अ०)	—	जगमोहन सिंह
(10)	मेघदूत (अ०)	—	

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(2) द्विवेदी युग (1900 ई०-1920 ई०)

- इस कालखंड के पद्य प्रदर्शक, विचारक और साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर इसका नाम द्विवेदी युग रखा गया है।
- द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' भी कहा जाता है।
- मैथिली शरण गुप्त ने दो नारी प्रधान काव्य – 'साकेत' व 'यशोधरा' की रचना की।

→ द्विवेदी युगीन रचना व रचनाकार

	रचना		रचनाकार
(1)	गंगावतरण	–	जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'
(2)	उद्धवशतक	–	"
(3)	गंगालहरी	–	"
(4)	शृंगार लहरी	–	"
(5)	हिंडोला	–	"
(6)	वैदेही वनवास	–	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
(7)	प्रिय प्रवास		" " "
(8)	चोखे चौपड़े		
(9)	रसिक रहस्य		
(10)	साकेत	–	मैथिलीशरण गुप्त
(11)	भारत भारती		
(12)	यशोधरा		
(13)	रंग में भंग		
14	जयद्रथ – वध		
15	पंचवटी		
16	शकुन्तला		

(17) नहुष

(3) छायावाद युग (1918 - 1936 ई०) →

→ छायावाद को हिन्दी साहित्य में भक्ति काल्य के बाद स्थान दिया जाता है।

→ जयशंकर प्रसाद जी की प्रथम काव्य कृति - उर्वशी (1909 ई०)

→ जयशंकर प्रसाद प्रथम छायावाद काव्य कृति - झरना

→ अंतिम काव्य कृति - कामयानी (1937 ई०)
(सार्वधिक प्रसिद्ध काव्य कृति)

— कामायनी के पात्र - मनु श्रद्धा व इड़ा

→ छायावादी युगीन रचना व रचनाकार -

	रचना		रचनाकार
1)	कामयनी	-	जयशंकर प्रसाद
2)	आँसू	-	"
3)	लहर	-	"
4)	झरना	-	"
5)	उर्वशी	-	"
6)	अनामिका	-	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
7)	परिमल	-	"

(8) गीतिका – सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(9) कुकुरमुत्ता – ''

(10) नये पत्ते –

(11) वीणा – सुमित्रानन्दन पन्त

(12) पल्लव – ''

(13) गुंजन – ''

(14) युगान्त – ''

(15) लोकायतन – ''

(16) काला और बूढ़ा चाँद – ''

(17) चिन्दम्बरा – ''

(18) नीहार – ''

(19) नीरजा – ''

(20) सान्ध्यगीत – ''

(21) दीपशिखा – ''

(22) यामा – ''

(23) रश्मि – ''

(4) छायावादोत्तर युग (1936 ई० के बाद)
(प्रगतिवादी, प्रयोगवादी, नयी कविता)

रचना रचनाकार

(1) रेणुका – रामधारी सिंह दिनकर

(2) हुंकार – ''

(3) कुरुक्षेत्र – ''

(4) उर्वशी – ''

(5) हारे को हरिनाम – ''

(6) नीम के पत्ते – ''

(7) सीपी और शंख — ''

(8) आत्मा की आँखे — ''

(9) हरी घास पर क्षण भर — सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

(10) आंगन के पार द्वारा — अज्ञेय

(11) कितनी नावो में कितनी बार

(12) कर्णफूल — नरेन्द्र शर्मा

(13) गाँधी पंचशती — भवानी प्रसाद मिश्र

(14) चाँद का मुँह टेढा है — गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

(15) भूरी-भरी खाक धूल — 'मुक्तिबोध'

(16) ठण्डा लोहा — धर्मवीर भारती

(17) अन्धा युग — ''

(18) पथिक — रामनरेश त्रिपाठी

(19) ग्राम्यगीत — ''

(20) जलियावाला बाग — सुभद्रा कुमारी चौहान

(21) झाँसी की रानी — ''

(22) मधुकलश — हरिवंशराय 'बच्चन'

(23) मधुशाला — ''

(24) त्रिभंगिमा — ''

(25) चार खेमे चौंसठ खूँटे — ''

(26) सतरंगे पंखो वाली — नागार्जुन

(27) ट्यासी पथराई आँखे — ''

(28) तुमने कहा था — नागार्जुन

(29) फूल नहिं रंग बोलते है। — केदारनाथ अग्रवाल

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वचन

वचन विशेष संख्या बोध का शब्द कहलाता है। शब्दों के जिस रूप में एक या एक से अधिक संख्या का बोध होता है। उसे वचन कहते है।

उदा॰ 1. बालकः पठति।
2. बालकः पठन्ति।

वचन के भेद — संस्कृत में तीन वचन होते हैं।

1. एकवचन
2. द्विवचन
3. बहुवचन

(1) एकवचन ⇒ संज्ञा के जिस रूप से किसी एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसे एकवचन कहते है।
जैसे – छात्रः, बालकः, वृक्षः, बच्चाः, लड़की।

(2) द्विवचन ⇒ जिस शब्द से दो वस्तुओं का बोध होता है। उसे द्विवचन कहते हैं।
जैसे = छात्राः, बालकः, वृक्षः, बच्चाः, लड़की।

(3) बहुवचन ⇒ संज्ञा के जिस रूप से एक से अधिक वस्तु या व्यक्ति का बोध होता है उसे बहुवचन कहते है।
जैसे – पुस्तकानि, कवयः, मानवः, लताः, छात्राः, बालकाः आदि

अपूर्ण संख्यावाची शब्द

1. एक:
2. द्वौ / द्वे
3. त्रय: / तिस्र: / त्रीणि
4. चत्वार: / चतस्र: / चत्वारि
5. पञ्च
6. षट्
7. सप्त
8. अष्ट
9. नव
10. दश
11. एकादश
12. द्वादश
13. त्रयोदश
14. चतुर्दश
15. पञ्चदश
16. षोडश
17. सप्तदश
18. अष्टादश
19. ऊनविंशति: / एकोनविंशति:
20. विंशति:
21. एकविंशति:
22. द्वाविंशति:
23. त्रयोविंशति:
24. चतुर्विंशति:
25. पंचविंशति:
26. षड्विंशति:
27. सप्तविंशति:
28. अष्टाविंशत:
29. ऊनत्रिंशत् / एकोनत्रिंशत्
30. त्रिंशत्
31. द्वात्रिंशत्
32. त्रयस्त्रिंशत्
33. त्रयस्त्रिंशत्
34. चतुस्त्रिंशत्
35. पञ्चत्रिंशत्
36. षट्त्रिंशत्
37. सप्तत्रिंशत्
38. अष्टत्रिंशत्
39. ऊनचत्वारिंशत्
40. चत्वारिंशत्

Toppersnotes
Unleash the topper in you

41. एकचत्वारिंशत्
42. द्विचत्वारिंशत्
43. त्रि चत्वारिंशत्
44. चतुश्चत्वारिंशत्
45. पंच चत्वारिंशत्
46. षट् चत्वारिंशत्
47. सप्त चत्वारिंशत्
48. अष्ट चत्वारिंशत्
49. ~~एकोन~~ नव चत्वारिंशत्
50. पंचाशत्
51. एक पंचाशत्
52. द्वि पंचाशत्
53. त्रि पंचाशत्
54. चतुः पंचाशत्
55. पंच पंचाशत्
56. षट् पंचाशत्
57. सप्त पंचाशत्
58. अष्ट पंचाशत्
59. ऊनषष्टिः | एकोनषष्टिः
60. षष्टिः

61. एक षष्टिः
62. द्वि
63. त्रि
64. चतुः
65. पंच
66. षट्
67. सप्त
68. अष्ट
69. एकोनसप्ततिः
70. सप्ततिः
71. एक
72. द्वि
73. त्रि
74. चतुः
75. पंच
76. षट्
77. सप्त
78. अष्ट
79. नव सप्ततिः | ऊनाशीतिः | एकोनाशीतिः
80. अशीतिः
81. एकाशीतिः
82. द्वयाशीतिः
83. त्र्यशीतिः
84. चतुरशीतिः
85. पंचाशीतिः

Toppersnotes
Unleash the topper in you

86 षडशीतिः — 1000 सहस्रम
87 सप्ताशीतिः — 10000 - अयुतम
88 अष्टशीतिः — 100000 - लक्षम
89. नवाशीतिः | ऊननवतिः | एकोननवतिः
90 नवतिः — 1000000 - नियुतम
91. एकनवति। — 10000000 - कोटि
92 द्विनवति — 100000000 - दशकोटि, अर्बुदम्, वृन्दः
93 त्रिनवति — 1000000000 - दशार्बुदम्
94 चतुर्नवति — 10000000000 - खर्वः
95. पंचनवतिः
96. षण्णवतिः
97. सप्तनवतिः
98. अष्टनवतिः
99. नवनवतिः | अथशतम, एकोनशतम्
100. शतक | एक शतम
101. एकाधिक शतम्
102. द्वाधिक शतम
103. त्र्यधिक शतम
104. चतुराधिक शतम
105. पँचाधिक शतम
106. षडधिक शतम
107. सप्ताधिक शतम्
108. अष्टाधिक शतम
109. नवाधिक शतम्
110. दशाधिक शतम

Toppersnotes
Unleash the topper in you

पूर्णवाचक संख्या शब्द

पहला - प्रथम:
दूसरा - द्वितीय:
तीसरा - तृतीय:
चौथा - चतुर्थ:
पाँचवा - पंचम:
छठा - षष्ठ:
सातवाँ - सप्तम:
आठवाँ - अष्टम:
नौवाँ - नवम:
दसवाँ - दशम:
ग्यारहवाँ - एकादश:
बारहवाँ - द्वादश:
तेरहवाँ - त्रयोदश:
चौदहवाँ - चतुर्दश:
पंद्रहवाँ - पञ्चदश:
सोलहवाँ - षोडश:
सतरहवाँ सप्तदश:
अठारहवाँ - अष्टादश:
उन्नीसवाँ - ऊनविंश:
बीसवाँ - विंश:
तीसवाँ - त्रिंश:
चालीसवाँ - चत्वारिंश:
पंचासवाँ - पञ्चाशः
सौवाँ - शततमः

वाच्यपरिवर्तनम्

वाक्य में क्रिया द्वारा प्रधान रूप से जो कहा जाता है वह क्रिया का वाच्य होता है अर्थात् वाक्य निर्माण की शैली को वाच्य कहते हैं।

वाच्य के भेद ⇒

वाच्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं।

1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

वाच्य परिवर्तन के नियम ⇒

(i) कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है। कर्ता के अनुसार ही क्रिया का पुरुष तथा वचन होता है।

वाच्यपरिवर्तनम्	कर्ता	कर्म	क्रिया
• कर्तृवाच्ये	प्रथमा विभक्तिः	द्वितीय विभक्तिः	कर्त्रनुसारं (परस्मैपदी) वचन, पुरुष
• कर्मवाच्ये	तृतीया विभक्तिः	प्रथमा विभक्तिः	कर्मानुसारं (आत्मनेपदी) लिंग, पुरुष, विभक्ति, वचन
• भाववाच्ये	तृतीया विभक्तिः	प्रथमा विभक्तिः	(क) लकारेषु प्रथम पुरुष एकवचन आत्मनेपदी (ख) प्रत्ययस्य योगे - नपुंसकलिंग प्रथमा विभक्ति एकवचन

(ii) कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है। कर्म के अनुसार क्रिया का पुरुष तथा वचन आत्मनेपद में होते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(iii) भाववाच्य में भाव की प्रधानता होती है। क्रिया हमेशा नपुंसकलिंग एकवचन या प्रथम पुरुष एकवचन आत्मनेपद में होती है।

कर्मवाच्य क्रिया बनाने की विधि =>

कर्मवाच्य क्रिया बनाने के लिये निम्नलिखित विधि—

(1) मूल धातु के बाद वर्ण 'य' लगाया जाता है।

(2) धातुओं में आत्मनेपद के रूप लगते हैं।

जैसे –

परस्मैपद	आत्मनेपद
लिखति	लिख्यते
पठति	पठ्यते
गच्छति	गम्यते
भक्षयति	भक्ष्यते

(3) सभी लकारों में क्रमशः प्रथम पुरुष और एकवचन का ही प्रयोग किया जाता है।

(4) ऋकारांत धातुओं के अंतिम 'ऋ' का 'रि' हो जाता है।

कृ – क्रि = क्रियते मृ – म्रियते धृ = ध्रियते

(5) धातु में स्मृ तथा जागृ के अंतिम 'ऋ' का 'अर्' हो जाता है।

जैसे – स्मृ – स्मर्यते, जागृ = जागर्यते